मुबहसे–आलमगीरी

मुसन्नीफ– अबुल कासीम रह.

मिल्लत–ए–महेदविया, अहमदनगर
millate_mehdavia_ahmadnagar@yahoo.com

contact details: 9762376137, 9762373118

सारी तारीफ अल्लाह के लिए जो आलमोन का रब है और आकबत मुत्तकियो के लिए है। सलवात व सलाम अल्लाह के रसुल मुहम्मद (स.) और आप कि आल और तमाम असहाब पर अम्माबाअद।

ऐ मुसन्निफ इस बात को जान ले के मियॉ इब्राहीम, कि ये मजलिस इस वक्त कि हे जब के बादशाह औरंगजब देहली से आकर अहमदनगर में ठेहरे थें। और इस शहर के आलिम काझी खतिब और मुल्ला जो हजरत महेदी अलसलाम के दिन से अदावत रखते थे। उहोंने बादशाह को बतलाया के यहॉ महेदवी कौम बहोत है और महेदी माउद आखीरूज्जमा को "आए और गए" कहते है। इनका अकीदा ही दुसरा है। बादशाह ने अबुसईद काझी को फरमाया के आप इस कौम को तलब किजीए और इनके अकीदे की खबर लिजिए। इस के बाद काझी ने रोजा शाह शरीफ रह. से पीरजादों को तलब किया और पुछा के तुम महेदवी हो? उहोंने जवाब दिया के हम महेदवी है, फरमाया, तुम्हारे दोन का कोई आलीम भी है के इस से बहेस करे? उहोंने जवाब दिया के हम ज्यादा मालुमात नहीं रखते के आप से बहेस कर सके। अलबत्ता हमारे पीरजादें मियॉ शख इब्राहीम मौजां चिचोंड में तशरीफ रखते हैं। काझी ने कहा, उन्हें बुलवाए।

इस के बाद इन लोगों ने हकीकत हाल कहला भेंजी। पस मौझा चिचोंड से हजरात, इलयास मिरा, मियॉ शख इब्राहीम, शेख आजम और अबुलकासीम बगैरा फुकरा ने शाह शरीफ रह. के रोज पर पहुँच कर काझी को इत्तला दीं। काझीं ने इन्हें तलब किया। ये लोंग जाकर काझी की कचेहरी में बैठ गए। काझी के बुलाने पर शेख इब्राहीम और शेख आजम काझी के घर में गए और उहें सलाम किया।

काज़ो ने सलाम का जवाब देकर पुछा, तुम महेदवी क्या अकीदा रखते हो?

इन लोगो ने कलमा–ए–शहादत पढा और फरमाया के हम खुदा ताआला की वहदानियत और रिसालत पनाह मोहम्मद सलल्लाहु अलहि वसल्लम की (तबलिग) इस्लाम पर कायम और आप के चारों असहाब खुलफाए राशिदीन को दोस्त रखते है और चारो मजहबो (हनफी, शफइ, हमबली, ओर मालिकी) को बरहक जानते है और हम सुन्नते वल जमाअत है और हजरत महदीमाउद अलै. को आकर जा चुके कहते है। उस के बाद काज़ो ने कहा,

आप किस दलिल से महदी माऊद को आकर जा चुके कहते है?

मियॉ शेख इब्राहीम रह. ने फरमाया इस दलिल से जैसा के आहजरत स. ने फरमाया, "अल्लाह तआला भेजेगा इस उम्मत में हर सदी के रास पर एक ऐसे शख्स को जो इस उम्मत के लिए इसके दिन की तजदीद करेगा मिश्कात हदीस की शराह करने वाले उलमा कहते हैं के दसवीं सदी का मुजददोद महदीमाउद है"। ये रिवायत तनबीयातूल तहरेज और नुवी शह मुस्लीम वगैरा की किताबों में मजकोर हैं। अल्लाह के सच्चे वली मुतशरअ कदवतूल मुताखारीन सय्यद मोहम्मद गेसुदराज रह. ने अपने मलफुज मे फरमाया है। "हदीस है के आहजरत स. ने फरमाया के अल्लाह तआला भेजेगे मेरी उम्मत से एक मेहदी मुजद्दीद को हर सदी के रास पर दसवी सदी मे मेहदी के सिवा कोई और मुजद्दीद ना होगा"। इमाम तिबरी ने अपनी तारीख में कहा है के बेशक

मेहदी 905 हिजरी मे जाहिर होगे। पर इस जात हजरत सय्यद मोहम्मद महेदीमाउद अलै. का जहूर इसी तारीख साल मे हुआ।
जिस को शक हो इसे लाजिम है के इन दलिलो पर गौर करे। पस साबित हो गया के यही जात महदीमाउद हैं। यही बात सच है इस में कोई शक नही पस हम दलिलों से महदी को सच्चा साबित कर चुके हैं। और आप किस दलिल की बुनयाद पर इन्तजार कर रहे हैं, फरमाइए।

काझी ने कहा, "इस सिलसिले में एक हदीस है के महदी ज़मीन को अदल व इन्साफ से भर देंगा जैसा के वह जुल्म व जोर से मामुर थी। इस हदीस से मालुम होता है के के महदी आन के बाद तमाम ज़ुल्म व जोर खत्म हो जाएगा और तमाम दुनिया में इन्साफ और रास्ती राएज हो जाएगी"। और तमाम लोग मुसलमान हो जाऐंगे। और तमाम दुनिया में कोई काफीर ना रहेंगा अभी तो ये हूआ नहीं, और तुम कहते हो के महदी आए और चले गए। ये बात किस तरह कहते हो ?

मियॉ शेख इब्राहीम रह. ने जवाब में फरमाया, इस सिलसिले में अल्लाह तआला ने अपने पैगम्बर को खबर दी है के तमाम लोग एक मिल्लत और दीन पर ना होंगे और इनसे ज़ुल्म व जोर दुर ना होगा और इन के दरमियान फसाद और इखतेलाफ बाकी रहेगा कयामत तक।

काज़ो ने कहा, वो कौनसी दलिल है? मियॉ शेख इब्राहीम ने ये आयते करीमा पढी "अगर तेरा रब चाहता तो सब लोगों को एक ही ग्रोह कर देता और वो हमेशा इखतेलाफ करते रहेंगे सिवाए इसके जिस पर तेरा रब रहम करें। और इसी के लिए इसने इन्हें पैदा किया हैं और तेरे रब की बात पुरी होगी की मैं दोजख को जिन्नो और इनसानो सब से भर दुंगा"। (पारा 12, रूकूअ 10)
"अल्लाह तआला ने फरमाया, और हम ने इनके दरमियान कयामत के दिन तक दुश्मनी और बुग्ज डाल दिया है"। (पारा 6, रूकूअ 13)

तफ्सीर–ए–मदारीक में इस आयत के तहेत ये लिखा है के वो लोग हमेंशा हमेंशा इखतेलाफ में रहेंगे और इनके दिल मुतफर्रीक रहेंगे ना इन में कभी इत्तेफाक होगा ना एक दुसरे की मदद करेंगे।

आयत "काफिर इस के बारे में हमेशा शक ही में रहेंगे यहा तक के वो घडी इन पर अचानक आ जाए या इन पर तबाह करने वाले दिन का अजाब आ जाए"। (पारा 17, रूकूअ 14)

हदीस "मेरी उम्मत में एक जमाअत हमेंशा हक के मुकाबले पर जंग करती रहेगी और वो कयामत तक अपने दुश्मनों पर गालीब रहेगी"। (सही मुस्लिम)

पस मालुम हूआ कलाम अल्लाह की इन आयतों और अहादीस रसुल सलल्लाहु अलहि वसल्लम से के दुनिया के तमाम लोग मुसलमान ना होंगे और इनके दरमियान का इखतेलाफ दुर ना होगा। कयामत तक अल्लाह की सुन्नत और कानून आदम अलै. की पैदाईश से इस जमाने तक इसी तौर जारी है। इरशाद बारी तआला है "बहूत कम ईमान लाते है और अकसरीयत फासीको की होंगी। इसी के साथ हक सुबहाना तआला ने अपने हबीब सलल्लाहु अलहि वसल्लम के हक में ईरशाद फरमाया है। हम ने आप को सिर्फ रहमतुललिल आलमीन बनाकर भेजा है"।

अशरफुलअम्बिया बुरहानुलअसफिया, हजरत मुहम्मद सलल्लाहु अलहि वसल्लम की जबान मुबारक से दोन पहुॅचने के बाद भी दुनिया के तमाम लोग मुसलमान ना हूए। पस हजरत महदी आखीरूज्जमा के दौर में दुनिया के तमाम लोग किस तरह मुसलमान होंगे? हमारे पैगंबर हजरत मुहम्मद सलल्लाहु अलहि वसल्लम ने अपनी उम्मत के हक में फरमाया हैं, "के मेरी उम्मत में 73 फिरक हो जाऐंगे और सिवाय एक के सब दोजख में जाऐंगे। जब आहजरत सलल्लाहु अलहि वसल्लम ने इन फिरको के पैदा होने को बयान फरमाया हैं तो हजरत महदी के जमाने में तमाम दुनियावाले मुसलमान किस तरह हो जाऐंगे"।

आप अच्छी तरह इन्साफ करे। "जो इन्साफ करता है इस पर अल्लाह रहम फरमाता हैं। ये बात रसुलअल्लाह स. ने फरमाई हैं"।

इस के बाद काज़ी ने सवाल किया, "इमाम महदी व हजरत ईसा एक जमाने मं पैदा होंगे और एक दुसरे की इक्तेदा करेंगे"। अब तक ऐसा नहीं हुआ और तुम इमाम महदी आए और गए कहते हो। किस दलिल से ये दावा साबित करते हो?

मियॉ शेख इब्राहीम रह. ने जवाब में फरमाया, "अपने पैगंबर स. की हदीसों और मुल्ला तफ्तजानी के कौल से हमारा दावा साबित है के एक ही जमाने में महदी और ईसा जमा ना होंगे"।

काज़ो ने कहा, वो हदीस और कौल पढें। मियॉ रह. ने हदीस पढी आहजरत स. ने फरमाया, कैसे हलाक होंगी मेरी उम्मत के इस के आगाज में मै हू और इस के आखीर में ईसा अलै. है और मेरे अहलेबैत से महदी इस के दरमियान में हैं। दो खलीफो के जमा होने के सिलसिले में मिश्कात में फरमाया। "जब दो खलीफो से एक वक्त में बैत की जाऐ तो एक को कत्ल करदो"।

काझी ने पुछा, ये हदीस किस किताब में हैं? मियॉ शेख इब्राहीम रह. ने कहा। मिश्कात में हैं पस काझी किताब मे ढुंढने लगा, मियॉ मजकोर ने खुद दोनो हदीसों को किताब से निकाल कर पढ दिया। फिर काझी ने कहा वो कौल कौन सा हैं? मियॉ मजकोर ने कौल पढकर सुनाया।

"ये जो कहा जाता है के ईसा, महदी की इक्तेदा करेंगे एक बेसनद बात है पस इस पर ऐतमाद ना करना चाहिए"। काझी ने कहा, ये कौल किस किताब में हैं? और इस का मुसन्नीफ कौन है? मियॉ मजकोर ने कहा किताब शर्ह मकासीद में हैं और मुसन्नीफ का नाम साआदुद्दीन तफ्तजानी रह. हैं। फिर काझी ने सवाल किया, महदी तो मदीना में पैदा होंगे और ये महदी हिंदुस्तान में पैदा हूए ह पस किस दलिल से आप ने इनको महदी आखीरूज्जमा साबीत किया है। मियॉ शेख इब्राहीम रह. ने कहा इस दलिल से के लफ्ज मदीना अरबी जबान में मुतलक वाक्य हूआ है। इससे तनकिद जायज नही। जैसा के अल्लाह का इशाद ह, ''और शहर के पुरले सिरे से एक आदमी दौडता हूआ आया'' (सुरःयासीन,आः 20)। काझी ने पुछा वह कौन सा शहर ह ? और इस शख्स का नाम क्या है? और वो किस पैगंबर के जमाने में मौजुद था? मियॉ मजकोर ने कहा। शहर का नाम अनताकिया है। वो जमाना हजरत ईसा अलै. का था, इस आदमी का नाम हबीब बुखारा था। पस आयत करीमा से मालुम हूआ के लफ्ज मदीना मुतलक शहर के लिए इस्तेमाल हूआ है।

काझी ने पुछा, जोनपुर तो हिंद में हैं और महदी आखीरूज्जमा को अरब में पैदा होना है? मियॉ मजकोर ने कहा, हदीस में आया है के महदी हिंदुस्तान में पैदा होगा।

काझी ने कहा, इस हदीस को पढें मियॉ शेख इब्राहीम रह. ने ये हदीस पढी महदी हुसैन रजि. बिन अली करमुल्ला वजा की औलाद से निकलेंगे इनकी विलादत काबुल या हिंदुस्तान में होगी फिर मक्का का कसद करेंगे मक्का से आगे बढ जाऐंगे। काझी ने कहा, वहा उन्होने क्या दावत की और किस ने कबुल किया? मियॉ मजकोर ने

कहा, हजरत महदी माऊद अलै॰ काबतुल्ला को गए और मिंबर पर सवार होकर अपनी महदवियत की दावत जाहीर की और हदीस पढी। जिस ने मेरी इत्तेबा की वही मोमीन है। इस के बाद मिया शाह निजाम बादशाह जाईस ने सब से पहले हजरत अलै॰ की बैत की और कहा आमन्ना व सद्दकना हम ईमान लाए और हमने तसदीक की। इनके बाद काझी अलाऊद्दीन बिदरी रजी. ने हजरत इमाम महदी अलै. से बैत कर के कहा आमन्ना व सद्दकना। इस के बाद काझी ने कहा, दो आदमियों की बैत दलिल साबित नहीं हो सकती। मिया मजकोर ने फरमाया के हजरत इमाम महदी अलै. के मुरीद बहूत थे। इन सब ने भी हजरत महदी अलै. कि बैत की थी, और शरीयत मोहम्मदी स. में दो माअतेबर गवाहों से दावा साबित हो जाता हैं। इन हजरात की बैत का जिक्र मैने इसलिए किया के वो हर दो बेहद मोअतेबर है इन में से एक तो शहर जाईस के बादशाह और दुसरे बिदर क काज़ी थे।इन दोनो की गवाही से हजरत इमाम महदी अलै. की महदवियत साबित होती हैं।

काज़ी ने कहा, जो हदीस तुमने पढी थी वो किस किताब में है। मियॉ इब्राहीम रह. ने फरमाया किताब इकद्‌ल दरर में है और हजरत अली रजि. ने अशार में फरमाया है। जैसा के अल शेख इब्ने अरबी ने फतुहाते मक्किया में जिक किया है। आगाह हो जाओ खातीमुल औलिया इमामुल आरफीन की जात फकीदलमिसाल होंगी वो सय्यद महदी आले अहमद से है वो हिंदी तलवार है जब के जाहीर हो, वो आफताब है जो हर बादल और तारीकी को दुर करेगा वो मौसमे बहार की बारीश है जा खुब बरसेंगी। पस मियॉ मजकोर ने कहा, हदीस नबवी और कौल हजरत अली रजि. से मालुम हूआ के महदी हिंदुस्तान में पैदा होंगे। और हम ने इसी महदी को कबुल किया है के इन की तशरीफ आवरी इस खास जमाने में साबित हो चुकी है। पस मियॉ शेख इब्राहीम ने काझी से दरयाफ्त किया। आप के पास किताब शोबुल ईमान है? काझी ने कहा, शोबुलईमान को क्यों पुछते हो? मियॉ मजकोर ने कहा, इस किताब में उलमाए अहले सुन्नत वल जमाअत ने बिलइत्तेफाक के जमाना जहुर के बारे में तवकूफ फरमाया है और शर्त इमाम महदी और जहुर इमाम महदो` आखीरूज्ज्मा को अल्लाह तआला की मशीयत के हवाले किया है। काझी ने कहा वो कौनसा कौल है पढीये? मिया मजकोर ने कौल पढा। लोगो ने महदी के बारे में इख्तेलाफ किया, तब अहले इल्म की एक जमाअत ने तवकूफ इख्तेयार किया और इस मामले कों इसके जानने वाले खुदा के हवाले कर दिया और सिर्फ इतना ही ऐतेकाद रखा के वो बीबी फातेमा रजि. बीन्ते रसुल सलल्लाहु अलहि वसल्लम की औलाद से होंगे। और अल्लाह तआला जब चाहंगा इन की तखलीक फरमायेगा और अपने दीन की नुसरत के लिए मबऊस करेगा।

काझी ने कहा, ये बात किसने कही है? मिया शेख इब्राहीम ने फरमाया ये कौल उलमाए अहले सुन्नत वल जमाअत का है। और इमाम बहैकी रह. किताब शोबुलइमान में लाए है। पस काझी ने कहा, ये किताब हमारे कुतुब खाने में नहीं है। मिया मजकोर ने कहा बादशाह के कुतुब खाने से तलब किजिए और देख लिजीए और अगर ये कौल इस किताब मं हो तो मुझे सच्चा जानिये वरना हदीस का ये हुक्म मुझपर आऐद होगा के झुठा मेरा उम्मती नहीं है। काझी दिल के जानता था के ये सच कह रहे है पस इस बात से अंजान होकर कहां अब तो शाम हो गयी लेकिन फिर सवाल किया, हदीस में हैं के दरीया के किनारे कुसतुनतुनिया का किला है महदी इस को अल्लाहु अकबर कहकर फतेह करेगा। तुम्हारे महदी ने इस किले को फतेह नहीं किया? मिया मजकोर ने फरमाया, नहीं किया हैं क्यों के इस हदीस में इख्तेलाफ वाकय हूआ है। काझी ने कहा, क्या इख्तेलाफ? मियॉ ने कहा, इस किले को तकबीर से फतेह करने वाला शख्स बनी इस्राईल से है और ये महदी बनी इस्राईल से नही हैं। इसी दौरान एक आलीम ने कहा के महदी औलाद

हुसैन रजि. से है। पस ये कौल बनी इस्राईल के तालूक से साबीत होगा। काझी ने कहा, मै ने एक किताब मे देखा है के महदी बनी अब्बास से होगा।

मियॉ शेख इब्राहीम ने कहा, उलमाए अहले सुन्नत वल जमाअत महदी को औलाद हूसैन रजि. से साबीत कर चुके हैं। काझी ने कहा? पहले तुम्हारे महदी की तहकीक करके इस के बाद बहेस की जाए।

मियॉ ने कहा, इसी इख्तेलाफ की वजह से हमारे बुजुर्गो में से एक मियॉ शेख अलाई रह. ने जो शेरशाह और सलीमशाह के मुर्शीद थे, उन्होंने मुतकद्देमिन सुन्नत वल जमाअत की किताबों से हजरत इमाम महदी अलै. के जहुर को आयत कुरआन अहादीस रसुल स. ओर उम्मत–ए–मरहूम के इजमा के अकवाल के तरीए तहकीक करके इस महदी की तसदीक की इसी महदी अलै. की महदवियत पर आमन्ना व सद्दकना कहा। हम सब महेदवी मुसद्देकिन हजरत मियॉ सय्यद मोहम्मद महदी माऊद आखीरूज्ज्मा खलीफतुल्लाह व खलीफा मोहम्मद रसुलअल्ला सलल्लाहु अलहि वसल्लम के अखलाक महमुदा की तसदीक करके आमन्ना व सद्दकना कहते हैं। क्योंके हजरत मियॉ सय्यद मोहम्मद महदी माऊद अलै. के तमाम अखलाक हजरत खातीमुररसुल व अम्बिया के जमीया अखलाक के थे। हजरात अम्बिया अलै. और अवलिया के मुसद्दीको का इत्तेफाक व करार इस बात पर है के ऐसे अखलाक से मवसुफ हस्ती हरगीजखुदा तआला पर इफतेरा करनेवाली नहीं हो सकती और ऐसे अखलाख वाले से हरगीज झुठ, बोहतान, खीलाफबयानी सादिर नहीं हो सकती। क्योंके अंबिया की नबुवत के सबुत में फुकरा के कलाम मे ये उसुल वाकय हूआ है के सच्चे आदमी से सच ही जाहीर होता है अगर इन्साफ करने वालो में से कोई मुसन्नीफ और सच्चा तालिब सच्ची तलब के साथ इमाम आखीरूज्ज़मा के शफ और अशरफूलअंबिया मोहम्मद मुस्तफा सलल्लाहु अलहि वसल्लम के शरफ की तहकीक करना और यकीन पैदा करना चाहे तो इस के लिए लाजोम व वाजीब है के किताब कशफूल हकाईक मुसन्नीफ इमाम मोहम्मद नसफी नं आयत करीमा ''लमा यलहकवा बिहीम'' के तहेत देखे के हर दो मोहम्मदीन का जिक्र मसावयाना तौर पर किया है के इमाम आखीरूज्ज़मा की जात सुरत व सीरत में आहजरत सलल्लाहु अलहि वसल्लम के जैसी होगी। याने उन की जात नबी स. की जात की तरह इनका इल्म नबी स. के ईल्म की तरह इन की जमाअत नबी स. की जमाअत के मानीन्द, इनका सब्र नबी स. के सब्र जैसा इनका तव्वकुल नबी स. के तव्वकुल जैसा तमाम अहवाल में नबी के जैसे होंगे। जाहिर व बातीन में इस तरह मसावी में बयान किया हैं। शेख मुहियुद्दीन इब्ने अरबी ने फतहाते मक्कीया मे किन काबीले तारीफ सिफात व अखलाक करीमा से हजरत इमाम महदी आखीरूज्ज़मा को मवसुफ किया है और विलायत खास मोहम्मदो का तफसीली बयान किया है देखना चाहिए के अपनी हकीकी मुराद को पहूचे इन्शाअल्लाह। मियॉ शेख इब्राहीम रह. ने काझी के सामने एक किताब देख कर पुछा ये क्या किताब है? इस ने कहा मुशकिलात है।

---

1. जल्द सुवम गुलशन, हशतुम चमन चहारूम तारीख सुलेमानी

   मियॉ मजकोर ने कहा इस किताब मं भी महदी अलैसलाम का जिक्र किया गया हैं। इस तरह के हजरत अली ने कहा के मैंने आहजरत स. से पुछा या रसुलअल्ला क्या महदी हम में से होंगे या हमारे गौरो से तो हजरत सलल्लाहु अलहि वसल्लम ने फरमाया, बल्के हम में से होगें अल्लातआला इन पर दिन को खत्म करेगा जिस तरह हमसे शुरू फरमाया है। हाफीजों की एक जमाअत ने अपनी किताबों में इस हदीस को बयान किया हैं इन में अबुलकासीम तिबरानी

अबुनईमुल असफहानी और अब्दुलरहमान बिन अबी हातीम वगैरा हैं। काझी ने कहा, जो तुम ने कहा मैं ने इस किताब में वही देखा हैं। फिर काझी ने कहा, तुम दलिले और हदीसे याद कर चुके हो, और हमें याद नही हैं। मिया ने कहा, हा जो दलिले जरूरी थे इन्हे याद कर चुका हु। यें काम हम पर लाजीम हैं। इस लिए के तमाम लोगों पर हजरत इमाम महदी अलैसलाम की तसदीक फर्ज हैं। क्योंके आप की जात वाजीबूल तसदीक थी, इसलिए के आप खुदा के माऊद थे और माऊदखुदा इस को कहते हैं के जीस के बारे में अल्लातआला ने अपनी किताब कुरआन में या अपने पैगंबर की जबान से इसके मबऊस करने का वादा किया हो। खुद हजरत सय्यद मोहम्मद महदी माऊद अलैसलाम ने फरमाया है के अल्लातआला के हूक्म और हजरत रसुलअल्ला सलल्लाहु अलहि वसल्लम की रूह के मुशाहदा के जरीये मुझे महेदवियत पर मामुर किया गया और आप अलैसलाम हमारे पैगंबर हजरत रसुलअल्ला सलल्लाहु अलहि वसल्लम की इत्तेबा करते थे और आप अलैसलाम का मरतबा मुजतहेदीन के बढा हूआ हैं। आप के मरतबे में कोई शख्स भी शरीक नहीं। उलमा ने फरमाया हैं के जो शख्स तमाम मोहम्मदी सिफात रखता हो और अपनी महेदवियत की दावत खुदा के हूक्म से और खुदा की किताब के मुवाफीक पेश कर चुका हो और जो नबियों और रसुलो की तरह अल्लाह की हुज्जत हो और जो खुदा का माऊद हो, मोहम्मद सलल्लाहु अलहि वसल्लम की विलायत मकीदा का खातीम हो और कुरआनी नस के मुताबीक कुरआन के मानीन्द, हिदायत और रहमत रखने वाला हो और कुरआन जीस की गवाही देता हो इमामत व खिलाफत के लिए नस कुरआन का मदलूल हो और जो बयानतुल्लाह (अल्ला की निशानी) और खुदा का महबूब कलाम़अल्ला के नस से हो, यहा तक के इस की कौम भी माऊद और मनसुस कुरआन हो और अपनी इत्तेबा के लहाज से पैगंबर का जाहीरी व बातीनी तौर पर ताबेअ हो चुका हों। ऐसा शख्स इन चंद जलील दलिलो के ज़रोये सबुत कतई पाचुका हो पस मजकोरा दलिलो में से हर दलिल व हुज्जत से इस की जात तमाम मखलुकात पर वाजीबूल तसदीक साबीत हो चुकी हैं। पस जीस ने इस बात को समझ लिया समझ लिया। इस बात की जात का इन्कार कुफ्र किस तरह ना होगा? जब हजरत इमाम अलै. के मुसद्दीको ने आप की जात जो वाजीबूल तसदीक जानकर आप पर इमान लाकर आमन्ना व सद्दकना कहा इस के बाद कलाम अल्ला की आयतों हजरत रसुलअल्ला की हदीसों और खुदा रसीदा उलमा जो अहलें सुन्नत वलजमाअत रिज़वानुल्ला अलैहीम अजमईन के पैरो और ताबअ थ इन के अकवाल जमा करके इमाम महदी आखीरूज्ज़मा यानी हजरत मिरा सय्यद मोहम्मद महदी माऊद अलैसलाम की महेदवियत को साबीत करचुके है। जीस तरह के हमारे नबी स. की नबूवत के सबुत में दलाईल कतई व यकीनी पेश करके आप स. की जात को वाजीबूल तसदीक साबीत कर चुके और इमान लाचुके है। इन्होने कहा के तमाम मोमीनो पर इमाम महदी की तसदीक लाजीम व वाजीब बल्के फर्ज हैं। इन ही उलमा की शान में हजरत मोहम्मद मुस्तफा खालीमुलअम्बीया सरदार असफीया ने फरमाया है के मेरी उम्मत के उलमा बनी इस्राईल के नबीयों के मानीद हैं।

इन सब बातों के बावजुद इमाम महदी की अलामात के सिलसिले में उलमा में बहूत से इख्तेलाफात और हदीसों में बेशुमार तारूज़ात है। इसी वजह से अरबाब अहलेदीन व सालकान राह यकीन ने (उसुल) ''इ सा तआ रझा तसा कता'' बयान फरमाया हैं ।आप इन इख्तेलाफात में हजरत इमाम महदी की इमामत व खिलाफत का सबुत करना चाहिए और इन महालात और मुशकीलात में कोई

शख्स जो ख्वाहीश नफ्स में गिरफ्तार हो चुका हो अपने मकसद को पहूचना चाहेगा तो गैर मुमकीन हैं। इस सिलसिले में एक आयत हैं।

''पस अल्ला ने इमान वालो को इस सच्ची बात की जीस मे वो इख्तेलाफ कर रहे थे, अपने हूक्म से हिदायत की है और अल्लाह जिसे चाहता है सोधे रास्ते की तरफ हिदायत करता है। (पारा 2, रू. 10)

तफसीरे रहेमानी में इस आयत के तहत लिखा है के दलिल नकली और मोअल्लीम बशरी के बगैर अल्लातआला ने मोमीनो को राहेहक दिखा दी इस के बाद हमारे आप के दरमियान क्या मुबाहसा व मुनाजीरा व रद्दबदल हो सकता है मगर बहतर यही है के खुदा के हूक्म पर अमल करे।

काझी ने कहा अल्लातआला ने क्या फरमाया है? मिया मजकोर ने ये आयात पढी।

1. जीस ने नेक काम किया अपने लिए है, जिस ने बुरा काम किया तो इसकी बुराई इसी पर है और तेरा रब बंदो पर जुल्म नही करता। (पारा 24, रू20)
2. जो शख्स बुरा काम करेगा इसका वबाल इसी पर हैं। कोई शख्स किसी का बोझ ना उठाएगा फिर तुम्हें अपने रब की तरफ लाटना है फिर वो तुम्हें जताएगा जिस में तुम इख्तेलाफ करते थे। (पारा 8, रू.7)
3. वो एक जमाअत थी जो गुजर गई इनके लिए है जो उन्होंने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया। तुम से इनके काम की पूछ नही होंगी। (पारा 1, रू.19)
4. मुझे हुक्म दिया गया है के तुम्हारे दरमियान इन्साफ करू। अल्लातआला हमारा रब और तुम्हारा रब है हमारे लिए हमारे अमल है और तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, हमारे और तुम्हारे दरमियान कुछ झगडा नहीं। अल्ला हम सब को जमा करेगा और इस की तरफ फिर आना है। (पारा 25, रू 3.)

याने फरमाया गया है के हर हालत में इन्साफ करो। इसी से मालुम होता है के हमारे अकीदे के लिए खुदा तुम से ना पुछेगा और तुम्हारे लिए हमसे ना पुछेगा जो नेक अमल करेगा। इस को अल्लाह अच्छा मुअवजा देगा। जो बुरा अमल करेगा इस को सजा देगा। वाज हो क कयामत के दिन सब से पुछने कि खुदा को जरूरत नहीं है।

काझी ने कहा मेरा फर्ज है के हर एक की तहकीक करू। पस मियॉ के फर्जंद शेख आजम ने कहा। ऐ काझी बादशाह की फौज में बहूत सी कौमे है यानी 73 फिरको से ज्यादा यहूद, ईसाई, पारसी, और मुशरीकीन आप किस कौम से पुछते है क्योंके जो लोग खारजील मजहब है वो खारजीयो की बाते करेंगे और जो लोग सच्चे मुसलमान है वो सच्ची बाते मुवाफीक कुरआन करेंगे। हर एक से पुछने और तहकीक करने से आपको क्या फायदा हासील होगा क्योंके ये बात मुकररा है के जो अमल बाप करता है इस का बदला बाप पाएगा और बेटा जो अमल करता है बेटा ही इस का बदला पाता है।

काझी ने कहा, बाप की नेकीया बेटे को नहीं दी जाती। लेकीन बेटे की नकीया बाप को दी जाती है। मियॉ ने कहा, वाज हो के जो शख्स नमाज नही पढता व रोजा नहीं रखता, शराब पीता ओजना करता है तो इस के बेटे पर अजाब किया जाता है या किसी का बेटा बुरा अमल करता है तो शायद इस का बाप अजाब में गिरफ्तार किया जाता है।

काझी ने कहा, गिरफ्तार नहीं किया जाता।

शेख आजम ने कहा, जिस तरह किसी की बुराई पर दुसरे को गिरफ्तार नहीं करते इसी मिसाल के मुताबोक इस की नेकी भी दुसरो को नहीं दी जाती। ये

दोनो बाते कलाम रब्बानी के खिलाफ हैं। काझी ने कहा, आयत पढोये। शेख आजम ने ये आयत पढी। लोगो अपने रब से डरो और उस दिन से डरो, जिस दिन बाप अपने बेटे के कुछ काम ना आएगा और ना बेटा अपने बाप के कुछ काम आ सकेंगा बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है सो दुनिया की जिंदगी तुम्हे धोका ना दे और खुदा के नाम पर तुम्हे धोका ना दे? और खुदा के नाम पर तुम्हे वो धोखेबाज भी धोका ना दे। (पारा 21, रू 13)

काझी ने कहा, तुम खुदा और रसुल के फरमान पर शरीयत मोहम्मदी के मुवाफीक अमल करते हो और दुरूस्त ऐतेकाद रखते हो।
शेख आजम ने कहा, हा हम सच्चा अकीदा रखते है खुदा की वहदानियत और रसुल स. की रिसालत और खुदा और रसुल के हुक्म पर मोहम्मद मुस्तफा स. की शरीयत के मुताबीक अमल करते है। चुनाचे अल्लाह तआला अपने कलाम मं खबर देता है के कह दो अल्लाह और रसुल की इताअत करो अगर वो सरताबी करे तो अल्लहा ऐसे मुनकोरो को दोस्त नहीं रखता।(पारा 3, रू 12)। काझी ने इस आयत करीमा को सुनकर मसरूर होकर इन बुजुर्गो को घर जाने की इजाजत देकर खुद बादशाह के सामने जाकर मुबाहसे की पुरी हकीकत जाहीर की। बादशाह ने फरमाया, क्या तुम महेदवियो के अकीदे से वाकीफ हो चुके और इनके मजहब की तहकीक कर चुके हो? काझी ने कहा, य लोग खुदा की वहदानियत और रिसालत के पहूँचने के कायल है। चारो सहाबा को दोस्त रखते है और चारो मजहबो को हक जानते है अहले सुन्नत वल जमाअत है, इमाम महदी आखीरूज्ज़मा को आकर जा चुके कहते है।

बादशाह ने पुछा, क्या इन पर कोई शरई हद सजा लाजोम आती है? काझी ने कहा, इन पर कोई हद, ना कत्ल, ना कैद और ना इखराज शरई तौर पर कोई सजा लाजीम नही आती। बादशाह ने कहा, हम अच्छी तरह जानते है के ये लोग पाबंद शरीयत और आलीमे शरोयत और शरोयत पर अमल करने वाले है और सवाल व जवाब में कुरआन की आयते और रसुल की हदीसो और बुजुर्गाने दोन के अकवाल से दलिल लाते है। हमारे पैगंबर का कलमा पढने वाले है। शरीयत के खिलाफ नही चलते, खुदा और रसुल के हूक्म के मुताबीक अमल करते हैं। अहले सुन्नत वल जमाअत का ऐतेकाद रखते हैं और ये जो कहते है के महदी आए और चले गए इसपर शरइ शरीफ का काई हूक्म लाजोम नहीं आता। अच्छा इन्हे रूखसत करदों।

जब काझी साहब अपनी मुकाम पर आए तो हम को दर्गा शाहशरीफ मजझुब रह. से बुलवाकर बादशाह की मजलीस की हकीकत जाहीर करके कहा बादशाह के हुजूर से इन की रूखसत की इजाजत हासील कर ली गई है चाहिए के अपने मकान चले जाए। पस हम लोग काझी अबुसईद से रूखसत हासील कर के रोजा शाहशरीफ रह. से मौजे चिचोंड को पहूँचे।

फकत अबुल कासीम रह.